क्योटो की तर्ज पर काशी को संवारने की पहल

वाराणसी (एसएनबी)। जापान के क्योटो शहर की तर्ज पर काशी को सवारनें के लिए क्योटो विश्वविद्यालय व काशी हिन्दू विश्वविद्यालय ने सहअध्ययन प्रारंभ किया है। इसका प्रारंभ वाराणसी नगर निगम के सहयोग से किया गया। साझा अध्ययन को क्लाइमेट एंड डिजास्टर रिसीलेंस आफ वाराणसी सिटी जोन एंड वार्ड प्रोफाइल का नाम दिया गया है। यह अध्ययन वृहद दृष्टिकोण के साथ शहर के आपदा प्रतिरोध की क्षमता का आकलन करेगा साथ ही उन बिंदुओं को उजागर करेगा जहां संशोधन की आवश्यकता है।

■ क्योटो व बीएचयू विवि ने किया शैक्षिक सहयोग पर हस्ताक्षर

बीएचयू के केंद्रीय कार्यालय के समिति कक्ष में शैक्षणिक समझौते के तहत काशी के अध्ययन में पांच महत्वपूर्ण आयामों को शामिल किया गया है जिसपर एक सर्वेक्षण होगा। इसमें पांच मुख्य पैरामीटर यानी प्राकृतिक, भौतिक, सामाजिक, आर्थिक एवं संस्थागत विषय को रखा गया है। इनसे जुड़ी पांच परिवर्तनीय परिस्थितियां भी हैं। शोधार्थी 125 मानकों के औसत स्कोर का उपयोग कर शहर कि प्रतिरोध क्षमता का आकलन करने का प्रयास करेंगे। शुक्रवार को यह रिपोर्ट मेयर रामगोपाल मोहले, बीएचयू के कार्यवाहक कुलपति तथा क्योटो विवि के वैश्विक पर्यावरण अध्ययन के ग्रेजुएट स्कूल के डीन की उपस्थिति में जारी की गयी। पर्यावारण व विकास संस्थान बीएचयू के निदेशक प्रो. एस. रघुवंशी व जापान के राजीव शॉ ने बताया कि क्योटो में रिसर्च स्टूडेंट रनित चटर्जी व बीएचयू के प्रमित वर्मा ने सह अध्ययन कर बनारस की प्रतिरोध क्षमता का आकलन किया है। अध्ययन का विस्तृत विश्लेषण प्रदर्शित करता है कि शहर में पर्यावरण

एमओयू पर हस्ताक्षर करते क्योटो के दल व मेयर।

नीति तथा भूमि उपयोग योजना अपनायी गयी है। हालांकि यहां छोटे पैमाने पर आपदाओं की आवृत्ति और प्राकृतिक पारिस्थितिक तंत्र की प्रवणता बढ़ गयी है। बुनियादी ढांचे के अंतर्गत, भौतिक प्रतिरोध क्षमता में महत्वपूर्ण सुधार हुआ है। सामाजिक प्रतिरोध क्षमता में सामुदायिक तैयारी और सामाजिक पूंजी मे इजाफा भी हुआ है। संस्थागत प्रतिरोध क्षमता में भी बढ़ोतरी हुई है। आर्थिक प्रतिरोध क्षमता में जहां एक ओर बेहतर रोजगार, आय और घरेलू संपत्ति दिखाई देती है, वहीं अभी तक आपदा से संबंधित मुद्दे के लिए विशिष्ट बजट शहर में नहीं है। अध्ययन की मानें तो शहर के पास सामाजिक पूंजी, घरेलू संपत्ति, शिक्षा और जागरूकता, जलापूर्ति प्रणाली तथा संस्थागत सहयोग की मजबूती है। पांचों जोन का तुलनात्मक विश्लेषण इंगित करता है कि अधिकतम लचीलापन आदमपुरा तथा न्यूनतम दशाश्वमेध जोन का है।

वरुणा जोन में स्वच्छता की दरकार : भेलूपुर एवं ट्रांस वरुणा जोन में स्वच्छता एवं ठोस अपशिष्ट प्रबंधन में तत्काल ध्यान देने की आवश्यकता है। ठोस अपशिष्ट के मूल स्थान पर अलगाव बहुत कम है तथा अधिकांश ठोस अपशिष्ट बिना ट्रीटमेंट के डंप किये जाते हैं। स्वच्छता के मूलभूत ढांचे को ठीक से सुधारनें की आवश्यकता है। पर्यावरण नीति की कमियों का प्रभाव विभिन्न करह का होता है, जो हरे-भरे रिक्त स्थान तथा भूमि प्रयोग से जुड़ा है। इनमें तत्काल सुधार की जरूरत है। इन दो क्षेत्रों की सामाजिक पूंजी के साथ जलापूर्ति तंत्र उनकी मजबूती है जिसे अच्छी तरह से समय के साथ बरकरार रखने की जरूरत है। दशाश्वमेध, आदमपुरा और कोतवाली जोन के मामले में प्रमुख शक्ति वहां के निवासियों के स्वास्थ्य, पानी ओर सामाजिक पूंजी में निहित है। बेहतर स्वास्थ्य प्रणाली, जलापूर्ति प्रणाली में कम रुकावट व मजबूत सामाजिक बंधन इन समुदायों के भौतिक व सामाजिक लचीलेपन में बढ़ोतरी करेगा। तीन क्षेत्रों में आपदा, जोखिम में कमी के लिये किसी बजट का प्रावधान नहीं है इसलिये, विशिष्ट गतिविधियां सीमित हो रही हैं। शासन प्रणाली की कमी एवं नीतियों का सही क्रियान्वयन न होने व प्रशिक्षित कर्मियों की कमी भी शहर और क्षेत्रों का मुख्य मुद्दा है।

छात्रा खींचेगी विकास का खाका : काशी के विकास का खाका जापान यूनिवर्सिटी में टाउन प्लान की छात्रा नेहा साहू खींचेगी। शैक्षणिक समझौते, शोध के आदान- प्रदान के तहत हुए समझौते के आधार पर विकास का खाका तैयार होगा। शाधार्थियों का अध्ययन विशेषज्ञों के पैनल से होते विकास कार्य के लिए मार्ग बनायेगा।

बनारस में विकास के मुद्द : क्षमता, विशिष्ट विभाग की पहचान, बजट आवंटन, कर्मियों का प्रशिक्षण, सीखने, समझ साझा करने के लिए सोशल व स्मार्ट मीडिया का विकास, स्वच्छता, ठोस कचरा प्रबंधन, सड़कों की स्थिति, स्वास्थ्य प्रणाली की बेहतर प्रौद्योगिकी।